कविता-संग्रह

बेसुर ढोल

दिनेश यादव

कलंकी, काठमाण्डू

बेसुर ढोल

(कविता-संग्रह)

दिनेश यादव

प्रकाशक

उर्मिल

कलंकी (काठमाण्डू)

पुस्तक :	बेसुर ढोल
लेखक :	दिनेश यादव
प्रकाशक :	उर्मिल कलंकी शिवनगर, काठमाण्डू (नेपाल)
सर्वाधिकार :	लेखकमे
संस्करण :	२०७८(२०२१)
मूल्य :	रु.१००/-

अपन बात

शब्द हमर आत्मा थिक । विज्ञानक विद्यार्थी रहितो, साहित्य हमर साँस बनि गेल अछि । बचपनसँ ल' क' आजुक दिन धरि, भाषा आ भाव दुनू संग हमर यात्रा निरन्तर रहल अछि ।

भाषा, साहित्य आ मानवीय अनुभवक प्रति हमर रुचि असीमित रहल अछि, जे समयक संग-संग मैथिली, नेपाली, हिन्दी आ अंग्रेजी चारू भाषामे समानान्तर लेखनीक रूपमे विकसित भेल । पेशागत रूपमे शिक्षक, पत्रकार आ लेखकक रूपमे अढाई दशकसँ बेसी सक्रिय रहैत, हम पाठ्यपुस्तक लेखन सँ ल' क' साहित्य आ अनुवादक क्षेत्रमे निरन्तर योगदान दैत रहल छी । 'साइन्स एण्ड टेक्नोलाँजी' शीर्षकमे अंग्रेजी माध्यमक कक्षा १ सँ १० धरि पाठ्यपुस्तक लेखन, गाउँपालिकास्तरीय स्थानीय पाठ्यक्रम निर्माण आ लेखन कार्य हमर पेशागत योगदानक हिस्सा रहल अछि ।

बेसुर ढोल शीर्षकक ई कविता संग्रह जनजीवनक गहिरगर सन्दर्भ, सामाजिक विडम्बना आ सांस्कृतिक चेतनाक स्वर थिक । ई संग्रह हमर तेसर साहित्यिक पोथी थिक । ई संग्रह जनआवाजक प्रतिनिधित्व करैत, समयक सान्दर्भिकता संग मौलिकता आ संवेदनशीलता समेटने अछि । मैथिली आ नेपाली भाषाक छिटफुट रचना सभकेँ समेटैत, ई संग्रह दू खण्डमे विभाजित अछि :(क) मैथिली कविता खण्ड आ (ख) नेपाली कविता खण्ड ।

मैथिली खण्डमे उनाईसटा कविता समेटल गेल अछि, जाहिमे ***फुटल ढोलक, पढल-लिखल बौआ, मैथिली तामाशा, गरीबक जिनगी, पण्डित जी'क तोता*** आदि रचना सब मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक आ विभेदक यथार्थक मार्मिक चित्रण करैत अछि । तहिना नेपाली खण्डमे पाँचटा कविता- ***लकडाउनमा भोका, देश-सीमा र लोकतन्त्र, मदारीहरुको डमरु*** आदि, समकालीन नेपाली समाजक संवेदनशील पक्षकेँ उजागर करैत अछि ।

ई संग्रहमे समेटल कविता सबमे समयक सान्दर्भिकता संग मौलिकता भेटत । जनआवाजक प्रतिनिधिक रूपमे, ई रचना सब केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहि, बल्कि सामाजिक दस्तावेज सेहो थिक । जनजीवनक संघर्ष, विडम्बना, आशा आ चेतनाक स्वर थिक ***बेसुर ढोल,*** जे कखनो बेसुर होइतहुँ, भीतरसँ गूंजैत अछि ।

लेखनीके यात्रा हमर पेशागत जीवनसँ जुड़ल अछि, शिक्षक, पत्रकार आ लेखकक रूपमे सक्रिय रहैत, हम पाठ्यपुस्तक लेखनसँ ल' क' साहित्य आ अनुसन्धान धरि अपन कलम

चलबैत रहल छी। ***भाषा, साहित्य आ मानक*** (मैथिली) आ ***गरीबों की जिंदगी*** (हिन्दी) जेकाँ पहिल दू पोथी प्रकाशित भऽ चुकल अछि । ई तेसर पोथी ***'बेसुर ढोल'*** हमर आत्मीय अनुभवक, भाषिक समन्वयक आ जनचेतनाक स्वर थिक ।

हमर ई कविता संग्रह–एकटा भावनात्मक यात्रा थिक, जे जनजीवनक सन्दर्भ, संघर्ष आ संवेदनाकेँ मार्मिक शैलीमे उजागर करैत अछि। मैथिली आ नेपाली भाषाक छिटफुट रचनासभ एहि संग्रहमे समेटल गेल अछि, जाहि सँ भाषिक विविधता आ सांस्कृतिक समृद्धि दूनूकेँ एक संग अनुभव कैल जा सकैत अछि।

समयक सान्दर्भिकता संग कविता सबमे मौलिकता भेटत–कखनो ई रचना सामाजिक चेतनाक स्वर बनि उठैत अछि, त कखनो व्यक्तिगत अनुभूतिक गहराइमे उतरि जाइत अछि । जनआवाजक प्रतिनिधिक रूपमे प्रस्तुत कविता सब अपन-अपन कथा कहैत अछि–कखनो विद्रोह, कखनो प्रेम, त कखनो मौन पीड़ा।

आशा करैत छी जे पाठकगण एहि संग्रहमे अपन आवाज, अपन पीड़ा आ अपन आशा देखता आ एकटा नव दृष्टिकोण संग कविता सबकेँ आत्मसात करता।

-दिनेश यादव
काठमाण्डू, नेपाल
२०७८ (२०२१) साल, आश्विन

अनुक्रमणिका

(क) मैथिली कविता खण्ड

१. फुटल ढोलक..१
२. पढल-लिखल बौआ..२
३. मैथिली तामाशा ३
४. रित..५
५. लालेलाल..७
६. गरीबक जिनगी...८
७. मैथिलीक बोमीं...९
८. अपने भाषा आन १०
९. बाल्यकाल ११
१०.धूर अहाँ बरद छी १२
११.पण्डित जी’क तोता १४
१२.कून नगर थिक ? १६
१३.बुच्ची चिडैय १७
१४.लुंगी आ धोत १८
१५.सियासतक आईग १९
१६.मिथिलाकें रित २१
१७. मिथिलाकें दानापानिए बताह छै २२
१८.छठ २३
१९. बेसुर ढोल २५

(क) नेपाली कविता खण्ड

२०.लकडाउनमा भोका २७
२१.नव वर्ष २८
२२.देश-सीमा र लोकतन्त्र २९
२३.बार्दलीमा खुर्सानीको बोट ३१
२४.मदारीहरुको डमरु ३२
२५. मानिसको रहर ३३

फुटल ढोलक

संख्याबलमे बेसी छी,
समाङ्गोमे कम नई छी,
हमरा बलसं अन्न उब्जय,
मुदा विपैत्तमे हमरा कियो नय सुनय,
कहबी बेजाए नय,
फुटल ढोलक के सुनय ।१।

पांचजन हम छी,
हाथोंमे दश छी,
अदरा बरसय,
खेतमे बाढि बहय,
नय हर नय बिया उपडैय,
घरमे बन्धक सभ कोय,
भुखसं चेङ्गनामेङ्गाके लोर चुबय ।२।

अन्न बसातै छी,
कोठी भैर दैत छी,
जब रौडी चलय,
मजदूरके के पुछैय,
पेटक जुना के कोलय,
मलिकबाके बखारी मुसाय,
खखरी देख जनबैन मन भरय ।३।

पढल-लिखल बौआ

हौ, पढल-लिखल बौआ,
तौँ मुर्ख कियैक बइन रहल छह ।
ठीकेदारक बोलीकैँ माध्यम,
तौँ कियैक बइन रहल छह ।१।

खोलह अपन बुद्धिकैँ मुन्ना,
आनक 'बडि लङ्वेज' कियैक बइन रहल छह ।
रहबे करए पुर्खा तोहर गुलाम,
तौँ सेहो ओहे कियैक बइन रहल छह ।२।

सिल्पी समुदाय ठामैहि ठाम,
तौँ आबो हिरालालक प्रतिक कियैक बइन रहल छह।
नय एलैय तोरा लेल प्रजातन्त्र आ लोकतन्त्र,
तइयो तौँ ओहे पात्र कियैक बइन रहल छह ।३।

सत्ताजातिद्वारा बनाओल माटिक मूर्ति,
तो एकैसम् शताब्दीमे सेहो कियैक बइन रहल छह ।
'हट केक' सदखनि बनल मधेश
तों बेदानन्दक प्रतिक कियैक बइन रहल छह ।४।

आनक कब्जामे तोहर सोह्रे आना जल, जंगल, जमिन,
तईयो तौँ दोसरकैँ गोटी मात्र कियैक बइन रहल छह ।
पोता सेहो दादा बनल इतिहास छइ,
तौँ फत्तेसिंह/परशुनारायणक प्रतिक कियैक बइन रहल छह ।५।

दोसरकैँ कब्जामे छ तोहर म्याकें बोली,
तईयो तौँ ओकरे स्तुतिकर्ता कियैक बइन रहल छह ।
हौ पढल-लिखल बौआ,
तौँ मुर्ख कियैक बनि रहल छल ।६।

मैथिली तामाशा

कहबी, करनी आ व्यवहारमे फरक अछि मैथिली,
कहैत छी, 'जे जहिना बाजए, सेहा छियै मैथिली'
मुदा अखनों 'हम-ओ' मे बाटल अछि मैथिली,
पकडने छीयै अपनेटाह बोली/शैली, कोनाक कहैत छी ई सबके मैथिली।१।

जे हम बजैत छी जौ सेहा रहैत मैथिली,
त, हमर बोलीमे सेहो लिखाइत मैथिली,
अघोषित मानकक रुपमेँ नहि लाधल जाइत मैथिली,
पकडने छीयै अपनेटाह बोली/शैली, कोनाक कहैत छी ई सबके मैथिली।२।

एक्के जातिक के रुपमे जौ रहितियै मैथिली,
त, हमरो जिभक लय बनल रहैत मैथिली,
एक्का-दूक्का जातिकेँ लेखनी कियैक बनल अछि मानक मैथिली,
पकडने छीयै अपनेटाह बोली/शैली, कोनाक कहैत छी ई सबके मैथिली।३।

किनल त ककरो नहि अछि मैथिली,
तईयो बनियाँगिरीके माध्यम कियैक बनल मैथिली,
पगडी, मुरेठा नहि पागक मात्र शान कियैक बनल मैथिली,
पकडने छीयै अपनेटाह बोली/शैली, कोनाक कहैत छी ई सबके मैथिली।४।

भूगोल आ सीमारहित जौ बनल रहैत मैथिली,
दडिभंगा आ मधुवनीके संभ्रान्तक बोलीमे संकुचित नहि रहैत मैथिली,
नेपालीय भूगोलमे ओकर प्रभावसँ मुक्त रहैत मैथिली,
पकडने छीयै अपनेटाह बोली/शैली, कोनाक कहैत छी ई सबके मैथिली।५।

जातिपातिके गन्धविहिन होमाब चाहि छल मैथिली,
मुद्दा एकर प्रचलनसँ थईहर-थईहर बनल अछि मैथिली,
अछोप, सोलकन, पीछडा, छोटका,
बड्का पचपनिया जातिमे बाटल मैथिली ,
पकडने छीयै अपनेटाह बोली/शैली, कोनाक कहैत छी ई सबकेँ मैथिली।६।

विद्यापतिके देवतुल्य बनाओल गेल भाषा अछि मैथिली,
मुदा विद्यापदकेँ नामपर हुनका वर्षौंधरि जीवित रखनिहारक सभहक
पुछारिबिहिन अछि मैथिली
ओकरा सभहक योगदानक चर्च त छोडि दिऔन

स्मरणबिहिन बनल अछि मैथिली
पकडने छीयै अपनेटाह बोली/शली, कोनाक कहैत छी ई सबकेँ मैथिली ।७।

ब्राहमणेत्तर सभसँ जिआओल गेल भाषा अछि मैथिली,
ग्राम्य आ मजदुर वर्गक वीरगाथा आ लोकगाथासँ भरल अछि मैथिली
दिनाभद्री, सलहेस, डाक गुवारक पगडीविहिन बनल अछि मैथिली
पकडने छीयै अपनेहिटा बोली/शैली, कोनाक कहैत छी ई सबकेँ बोली ।८।

तामाशा नहि रहयैक कहियो मैथिली,
मुदा भाषाक नटवरलाल आ दुकानदारक कारण तामाशा बनल मैथिली,
भाषापर ग्रहण लगौनिहारक पहिचान करी जौ आगा बढब, सर्वमान्य वनत मैथिली,
पकडने छीयै अपनेहिटा बोली/शैली, कोनाक कहैत छी ई सबकेँ बोली ।९।

(२०७६ पुस ८ मा राजबिराजका देवेन्द्र मिश्रको कविताको प्रतिउत्तरमा लेखिएको कविता)

रित

मैदान कयलाके बाद
पैनछुवा त रिते छ्यैक,
फुलही लोटा नहि सहि
मिनेरल बोटलमे पानि भइरते छथि,
खेतक आईर काँत
गालपर हात राखिके लोक बैसबे करैत छथि,
मिथिलाके ई त पुराने रित छ्यैक ।१।

पछुवा रोटी खेनिहार सभ
आगा कहियो नहि बढैत छ्यैक,
मोटका रोटी खेनिहार सभ
हर बहै छथि,
छत्ता तर बैस मालिक
हाथपर आंगुरक घुस्सा दइते छथि,
मिथिलाके ई त पुराने रित छ्यैक ।२।

तेलमालिस करैवाला सभ
गुलाम त होबे करैत छथि,
भूँइयामे बैठईवाला सभ
जी-हजूर मालिक करिते छथि,
ननकिरहबा बिमार छहि
तईयो दरबज्जा पर हाजिर छथि,
मिथिलाके ई त पुराने रित छ्यैक ।३।

रोटीपर नून, बुकनी, पियाउजक चटनी
खेनिहार सभ जनबनिहार होइते छ्यैक,
दुई/चारि शेर बइन भेटल
साँझुका जोगाड भइये जाय छ्यैक,
एकचुल्हिया पजरल, मरमसलाके जोगाडमें
फाँडमे धान लके दोकान दौडैय छथि,
मिथिलाकें ई त पुराने रित छ्यैक ।४।

माथपर ठोप आ त्रिपाइत डाइढ तानैवाला सभ
ब्रह्मनालक अवतार मानवे करैत छथि,
प्रणामपाति करि आशिर्वाद त भेटबे करैत छ्यैक,
दान, दक्षिणा लेबे करत
नहि त मनमनिया श्राप सुनय पडैत छ्यैक,

मिथिलाके ई त पुराने रित छ्यैक ।४।

रौदमे पगडी आ युद्धभूमिमे मुरेठाके प्रचलन
मिथिलामे लोकप्रिय छ्यैक,
यज्ञोपवितो उपरान्त लगबैयवाला पागक भारी
जबरजस्ती आब माथपर चढबैत छ्यैक,
बुद्धके बहिष्कार कएनिहार सभ
पेरबा आ छागडके हलाली कइरते छथि,
मिथिलाके ई त पुराने रित छ्यैक ।५।

स्रोहश्राद्धपर गौदान करबाके मृत्तआत्मा सभ
स्वर्गमे दूध पिविते छथि,
डर, त्रास आ धार्मिक आडम्वरीके
अस्त्र बना,
सभा नहि सहि गाममे
भोज बलजोरी करबैते छथि,
मिथिलाके ई त पुराने रित छ्यैक ।
(२०७४ पुस ३० रविबार)

लालेलाल

शीरपर लाल,
धरि तर लाल,
सदगरि बनल लालेलाल,
आब कहू ई मैथिली सम्मेलन कोनाके भेल।१।

विवाह जका साज बनल,
सौराठ जका अछि सभा बनल,
महाकविके माथपर सेहो राखि देलौ पाग लाल,
आब कहू ई मैथिली सम्मेलन कोनाके भेल।२।

जातिविशेषक वियाहक लोकोचारमे होइछ पागक रंग लाल,
ओकर प्रतिक सर्वजनके शीरपर कियैक चढि गेल,
जातियताक लेल बाँकी आब की रहि गेल,
आब कहू ई मैथिली सम्मेलन कोनाके भेल।३।

भिजिट नेपालक नामपर भेटल सरकारी माल,
तई देखल गेल लाल रंगक कमाल,
मैथिली अखनों अछि 'हम-ओ'मे बाँटल,
आब कहू ई मैथिली सम्मेलन कोनाके भेल।४।

(२०७६ पुस ७,सन्दर्भ :विराटनगरमे अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन)

गरीबक जिनगी

कहियो नूनतेल,
कहियो लत्ताकपडा,
दबाईकें जोगाड त लगेबाक अइछे,
पवनिकें तयारी त चलिते रहैक छ्यैक,
बेटीक बिदागरी सेहो आबि जाइत छ्यैक,
सनेसबारीमें चंगेरा भरबाके छइहें,
एक खड साडी,
धोती आ कुर्ताके त देबाक परम्परे छ्यैक ।१।

बौआबुच्चीके शनिचराक लेल,
चउरक इन्तजाम त भँ जाइत छैक,
गुरुदेवक दक्षिणाक चौवन्नीके लेल,
पसिना छुटैट छ्यैक,
सुपारीक जोगाड मे,
मौनीभरि धान लए दोकान दौडबाक अइछे,
फाहमें सक्कर त मांगैह पडैत छ्यैक ।२।

अगहनमें भरल कोठी,
पुसमे खुलि जाइत छ्यैक,
माथपर भरि पथियाँ धान
लए बजार जेबाके छईहे,
चारि आना बेसी मोल भेटक की ?,
ताहिलेल एक चट्टी सँ दोसर,
आ तेसरमें दौड लगेबाक वाध्यता छ्यैक ।३।

चुल्ही पर आँच,
अनियमित भेला महिनों भँ गेल छ्यैक,
कहियो बौआ भुखले, कहियो बृद्ध म्या आ बाबु,
ओहिना सुति रहैत छ्यैक,
मालिक हौ, अन्न दहक,
गरीबके बेर-बेर लेहारा करैइये पडैय छ्यैक,
एक गोटा किसानक जीनगि अहिना चलैत छ्यैक ।४।

(अन्तर्राष्ट्रिय मातृभाषा दिवस २०१९, ९ फागुन २०७५ मे प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे वाचल गेल कविता)

मैथिलीक बोमी

ओ कहैत छथि हम अभियानी,
ककरोसँ कम नहि ज्ञानी,
दोसरक बात कियैक हम मानी,
तेँ मैथिली आजू बनि रहल अछि कहानी ।१।

सभहक मृदङ्गक ताल अपने-अपने जानी,
मैथिली बोमी दँदके कानी,
अहिमे किनको नहि छनि हैरानी,
तेँ मैथिली आजू बनि रहल अछि कहानी ।२।

करोडक छी बोली ई सभकेओ जानी,
तइयो करैत अछि अपनेसँ बेइमानी,
हम जे बजै-लिखै ओहे मैथिली वाणी,
ई घमण्ड जाधरि मानी मैथिली बनल रहत कहानी ।३।

मैथिलीसँ किछुके भेट रहल कुटिसानी,
ओहिमे तिरपिट परिवार आ दुनू परानी,
ओकरा मतलब नहि एकर हानी,
तेँ मैथिली आजू बनि रहल अछि कहानी ।४।

अपने भाषा आन

हौ बाबु, डका पइर गेलह, अपने भाषा आन बइन गेलह,
बोली हम्मर विरान नहि छहि,
तईयो पराय मानि छहि,
हम्मर म्याक भाषिका अपने छहि,
मुदा मान्यता कहा दैत छहि,
हौ बाबु, डका पइर गेलह, अपने भाषा आन बइन गेलह ।१।

भाषिक दियाद कहैत छहि ई मात्र हम्मर बोली,
जन-हम नहि बुझैत छि ओकर बोली,
अपन लय-भाषा जन-हम्मर शैली,
ओकरा नहि मानैत छहि जन-मानक शैली,
हौ बाबु, डका पइर गेलह, अपने भाषा आन बइन गेलह ।२।

भाषाक बन्दरबाँट जारी छहि,
एहि नामपर दूकान सेहो निक चलै छहि,
भाषिक बनियाँसभ लुटैट-लुटैट तवाह छहि,
मुदा भाषा हमर ठामेठाम छहि,
हौ बाबु, डका पइल गेलह, अपने भाषा आन बइन गेलह ।३।

भाषा एकदूसरके जोडैयवाला माध्यम थिक ,
लोकसंस्कृति आ लोकगााथा एकर शाखा थिक,
नटुवा बजनिया एकर प्रचारक थिक,
तईं ओकर परम्परागत शैली कियैक नहि ठीक,
हौ बाबु, डका पइर गेलह, अपने भाषा आन बइन गेलह ।४।

अपने धाइम, अपने डाइनक लिला बहुत केलह तों,
गोसाई आ महरा सेहो बहुत केलह तों,
आब जन-जनके स्वीकारह तों,
बहुत भेलह भावत आब एकरा समटह तों,
हौ बाबु, डका पइल गेलह, अपने भाषा आन बइन गेलह ।५।

(अन्तर्राष्ट्रिय मातृभाषा दिवस/शिवरात्री २०७६-११-०९)

बाल्यकाल

छलैह एकटा जमाना,
खुशीक नहि कुनू ठिगाना,
चन्दामामा तर जेबाक चाहना,
मुदा टाँट पर बैसल टिकुलीक दिवाना,
आहा, बाल्यकाल बहुत सुहाना ।१।

कर्चीक छडि बनाना,
मास्टरजीक टेस्ट अपने पर करबाना,
पाटी पर कारिख लगाना,
पत्थरखडी सँ कख-कबिरकान लिखना,
पढाईसँ बेसी खेलकूदक दिवाना ,
आहा, बाल्यकाल बहुत सुहाना ।२।

गोरहा खेतमे महिस चराना,
जलखोइ-कलौह भैंसबारेसंगैह खाना,
गुल्ली-डन्डी खुब खेलना,
चौपायाक ओगरबाहीमें मन लगाना,
इस्कुल जेबाक नहि चाहना,
आहा , बाल्यकाल बहुत सुहाना ।३।

पठरु, बच्छरुसंग खेलना,
आनक खेतसँ धान नोइचके लाना,
अगहायत धरि खुआबैत रहना,
कूदफान खुब करना,
टिसन नहि जेबाक अनेक बहाना,
आहा, बाल्यकाल बहुत सुहाना ।४।

लोरहा-आठीक चाहना,
फुनगी परक आम ढेपासँ तोड्ना,
हाथसँ ओकरा गिला करना,
ओहीमे बोहैर बनाके चुसना,
अहि बहाने फुलबारीक ओगरबाही करना,
आहा, बाल्यकाल बहुत सुहाना ।५।
२०७७ जेठ २,(शुक्रबार ११:२५ अपरान्ह)

धूर अहाँ बरद छी

दोसरेके लेल बहब,
खुट्टामे बानहल रहब,
कुट्टीसानी लेल टुकुर-टुकुर ताकब,
मलिकवाक दाना लेल कच्छर कातब,
डिरिएबाक आदत बनाएब
तिरपित ओहीमे रहब
झुठ नई छै शनिश्चराक कहब-
धूर अहा बरद छी ।१।

बधिया त पहिने भ गेल,
बाछाक जामाना गेल,
साढ बनाबक समय सेहो गेल,
मर्खाहा बनबाक नई करु झेल,
टाइरमे बहब जमाना गुजैर गेल,
खैर-दाना बिना लार-पुआर खाएब,
झूठ नई छै शुक्राके कहब-
धूर अहा बरद छी ।२।

घेंचमे लागल गरदामी,
ओईमे लटकल डोरी,
कहियौ औतैह लागल कौडी,
सिंहमे तेल मालिस तोडी,
अई सिंगारक नई कुनू जोडी,
जोतबालेल तयार रहब
झुठ नई छै बृहस्पतियाक कहब-
धूर अहा बरद छी ।३।

आँखि बन्द कोलमे घुमै,
कहियो झपकैत-झपकैत हर तानै,
सदखनि जुआ आ पालो बहै,
जोतहा जब पुच्छ पकडै
अरे आह-आह कहैत अइठै
कान फडफराबैत मुडि हिलाएब,
झुठ नई छै बुधनाक कहब-
धूर अहा बरद छी ।४।

कांढिसं इलाजक आदि,
अपना पर मूँहमे जाबी,
दूसराक बालि पर हाबी,
ढोकनासँ निकलत बदमासी,
बेसी कसबाकलेल नाथि,
तइयौ जुवाली सहबे करब,
झुठ नई छै मंगालाक कहब-
धूर अहा बरद छी ।५।

लाँधी खाली रहत
पेटके लेल डिरियाबै पडत,
मलिकबा त जोतेबे करत,
दयाभावसँ मलिकाइन पुवार ओगरत,
गोबर कर्सी अपन मर्जीसँ उठाएत,
ठूठ पुच्छ हिला-हिलाके कुकुरमाछी भगाएब
झूठ नई छै सोमनाके कहब-
धूर अहा बरद छी ।६।

कतबो दौनि घुमब,
तइयो पेनी खाएब,
कहियो गोला कहाएब,
सिलेबिया सेहो कहाएब,
जौ नई बहब, त बुढवा कहाएब,
नियति बनल मालिकके खुश करब,
झुठ नई छै रवियाके कहब-
धूर अहा बरद छी ।७।
(कलंकी निवास, २०७७ पुस ३)

पण्डित जी'क तोता

एकगोट मनुक्खके देखते
पण्डित जी'क तोता
अनाहक कहैछ- 'धूर मुर्ख',
ई सुनिते मनुक्ख आबाक छै,
प्रतिउत्तरक अवस्था गौण छै,
मुदा मनेमन बोली अपन गुनगुनाई छै,
कियैक त ओ मनुक्ख छै।१।

पिजडामे बन्द तोता
मनुक्खके देखते
फेर कहैछ- 'धूर अज्ञानी'
ई सुनिते मनुक्ख स्तब्ध छै,
अनाहक मथापिच्चीमे डुइब जाई छै,
तईयो अपनाके सम्हारैत बाट चलैत छै,
कियैक त ओ मनुक्ख छै।२।

दोसरके दानापानी पर जीवित तोता
मनुक्खके देखते
चिच्चियाबैत कहैछ- 'धूर बौका'
ई सुनिते मनुक्खक मियाद गरम छै,
मुदा कहूना-कहूनाके शान्त छै,
अपन मिसनमे दत्तचित्त छै,
कियैत त ओ मनुक्ख छै।३।

आनक बोली बोलैवला तोता,
मनुक्खके देखते
हिंहिंआएत कहैछ- 'धूर नामर्द'
ई सुनिते मनुक्ख निराश छै ,
मुठीभरि लोकक कुकृत्यसं चिन्तित छै,
मुदा बखारीभरि लोकक मुँह खुजत से विश्वासमे छै,
कियैत त ओ मनुक्ख छै।४।

बहसल जाइत छल तोता ,
तब, सिकायत भेल पण्डित जी'सँ,
रामधुलाईमे तोता छै, आब बनल ऊ मौन छै,
मुदा मनुक्ख ओकरा घुरि-घुरि देखैत छै,

तब हंसैत तोता कहैछ-
'बौआ, आब बुझनामे आइब गेल हेतौ ,
हम तोता तों मनुक्ख छें' ।५।

पण्डित जी'क तोता,
साँच्चे, मलिकबासँ कम कहाँ छै,
उलहन पर सेहो महान छै,
उल्टे चोर कोतबालके डाटैत छै,
माईर खेलाके बादो अपनाके पैघ मानै छ,
कियैक त ऊ पण्डित जी'क तोता छै,
तें ऊ ओकरे भाषा बोलै छै ।६।

(२०७७ पुस ७)

कून नगर थिक ?

व्यक्तिगत बातमें जागब,
जन-जनके मुद्दामें सुतब,
रौब-धौंसमे आगा देखाएब,
बल-सीनाजोरिमे जुटब,
ई कून नगर थिक कि अहाँ बताएब ?।१।

पग-पगमें धर्म देखब,
देग-देग पर गोसाई देखब,
नियमित भक्ति संगीत सुनब,
तईयो स्वार्थ पर संगै जुटब,
ई कून नगर थिक कि अहाँ बताएब ?।२।

दहेजपर बुच्ची जलैत देखब,
बौआसभ भैंस चरबैत देखब,
भ्रुणहत्याक समाचार सुनब,
भाई-भाईमे खटपट देखब,
ई कून नगर थिक कि अहाँ बताएब ? ।३।

साँझे दादाक खिस्सा सुनब,
सकाले दादीक पराती सुनब,
प्राते तुलसीक चौरामे जल चढाएब,
भोरे काँध पर कोदारि ऊठाएब,
ई कून नगर थिक कि अहाँ बताएब ?।४।

बिना फलक आशके परिश्रम करब,
पसिनाक मोलतोल होइत नहि सुनब,
गिरहत सदखनि मोटाइल देखब,
जन-बरिजानाक मुह सुखाएल देखब,
ई कून नगर थिक कि अहाँ बताएब ? ।५।

बहुतके पैरमे चप्पल नहि देखब,
पैसा-पैसाक लेल मोहताज देखब,
मेजमान आएल पडोसी तर दौडब,
एक पुच्ची दूध आ चाह पत्ति मागि लायब,
ई कून नगर थिक कि अहाँ बताएब ? ।६।

बुच्ची चिडैय

फूलबारीमे चिडैयक चुनमुन,
बड निक ओ प्राकृतिक धून,
सबगोटाके ओतेह छय अपने-अपने धन,
नर/मादाके आइबते बुच्ची चिडैय करे चुनचुन ।१।

बुच्चीके देह पर पाँखि पौनकल शुरु रहैय,
उडबाक अभ्यास सेहो चालु रहैय,
भूवाँसँ सभटा अंग झाँपलो नय रहैय,
तखने दूष्ट चिलहौरक नजर ओकरा पड पैड गेलैय ।२।

कहियौ फुसिएबाक प्रयास चालू रहैय,
कहियौ जोरजबर्दस्तीके अभ्यास जारी रहैय,
बेर-बेर होयत रहल ई कु-प्रयास,
झपटैमे एकदिन सफल कएलक ओ अपन प्रयास ।३।

बुच्ची चिडैय 'बचाउ-बचाउ'के गुहार करैत छहि,
बचबैवाला आसपास कियो नय छहि,
कसाई चिलहौर बिचारीके नोइच रहल छहि,
शोणितसँ धर्ति लाल भेलाक बाद अनेरे ओ चर्चामे छहि ।४।

लुंगी आ धोती

जाड सँ बचबाक लेल लुंगी पहिर घुर तर बैसल छी,
हावा बहिते धूवाँके आज्ञापालक बनि जाइत छी,
तईं कहियो पूरब त कहियो पश्चिम दिसि माथ घुमा लइत छी,
पछिया बहिते लुंगीके ओढना सेहो बना लइत छी ।१।

सियौऊवा डाढिबाला फाँटल पैन्ट डाँढमें लटकौने छी,
कोठारी पहिरब आशमें झालरबाला सैन्डो पहिरने छी,
सिट-सिट हावा बहिते थर-थर कपैत छी,
कखनों लुंगीके ओढना सेहो बना लइत छी ।२।

धुआ धोती लगबैवाला सब हिटर तपैत देखने छी,
कर्सीबाला घुरक बात सेहो ओ सब करैत सुनने छी,
मुदा धोतीके ओढना बनाओल नहि देखने छी,
पूर्वा बहिते लुंगीके ओढना बना लइत छी ।३।

लुंगीके गाँति बन्हने बौआबुच्चीके देखने छी,
ओहिमें बनाओल खोइछामे चुरा-सख्खर सेहो देखने छी,
ब्रासलेट धोतीबला सबके ओ आनन्द लइत नहि देखने छी,
मुदा लुंगीके कहियौ गाँती, कहियौ ओढना बना लइत छी ।४।

सियासतक आईग

अत्यंत अप्रभावी राजनीतिक रुपसं,
बेहद विछिन्न सामाजिक रुपसं,
देश लडखडाइत आर्थिक रुपसं
राष्ट्र जर्जर बनैत कुर्सीके उस्तादसं ।१।

लोकजन अभावे अभावमे बाँचल,
सरकार अपने मनमौजीमे लागल,
एतेह मानवताके सेहो फसरी लागल,
आब शेष कि एतेह राखल ।२।

चाहुंदिश इतिहासक करिया पन्नाके भय,
सहिदक आहुतिसं प्राप्त विजय,
तानाशाही मनोवृत्तिसं कहि भ ने जाए पराजय,
सनकहा शासकसं कहि फेर जनताके सोणित ने बहय ।३।

भूमिजनके छै इतिहासक उज्जर नव-पन्नाक आश,
अमवश्याके घनघोर अन्हार हटेबाक प्रयास,
नेताक धोकाधडीसं कतबो निरास,
तईयो सडकपर फेरसं निकलबाक ओ करैत साहस ।४।

शब्दक लातम लात फेर शुरु,
तालीमे फरक-फरक धुन सुनु,
मरहमपट्टि के आस अखनो जुनि करु,
फेर चुनावमे सुनु आ गुनु ।५।

दुईतिहाई भोट भेटल,
प्रचण्ड बहुमत सेहो नै सम्हरल,
देशक अस्थिरता तोडब ओकर बाचा छल,
संवैधानिक व्यवस्था विपरित ओ कयैलक छल ।६।

बादशाहक मजा लुटैत,
तानाशाहक पथपर चलैत,
लोकतन्त्रक दूधारि तलबार चलबैत,
कटबाक कलुषके चाहि शुभ सेहो कटैत ।७।

दुनियामे राजनीतिक आत्मा सत्ता बनल,
एकरे भुख पर नेता टिकल,
तें चाहूदिश गन्दा गर्देगर्दा भरल,
तें खुला सांस लेबैयमे दिक्कत अईछ भ रहल ।८।

आब घटल शासकके ओज अईछ,
मन्त्रमुग्ध करैवला भाषण सेहो नै अईछ
बौद्धिक स्खलन चरम उत्कर्ष पर अईछ,
तें ओ राजनेता नई स्वकेन्द्रित नेता बनल अईछ ।९।

राष्ट्र/राष्ट्रियता पर सब एकैह मत छल,
तें सोचिके लोक ओकर कंधा चुनने छल,
मुदा तीन सालमे देश शैतान आत्मके शापित काल बनल,
महाभियोगसं बचए लेल निर्वाचनक घोषणा भेल ।१०।

इतिहासक कूडाघर विफल लोकसं भरल,
सांस्कृतिक विरासतके धुंजा उडल,
तीन सालमे राजनीतिक शील सबस बेसी टुटल,
पदसिद्ध जिम्मेवारी हंसीमजाकमे बितल ।११।

सियासतक आईग अखन जोरसं धधरल,
अन्यसहित अपनो ओईमे जैल-मैर रहल,
राख मनबाक बेर-बेर उद्दत बनल,
तें सत्ता आ राजनीतिक मर्यादा धुंवा-धुंवा देखल ।१२।

आदत हुनक अनुभवक लकीर भ्रुठ देखाबी,
आयुवृद्ध मुखडापर मिसियो नई ईमानदारी,
देखब सदैब उथलापन आ खोखला बयानबाजी
हरकत हुनक सदैब देखब छिछोरी ।१३।

(मध्यावती निर्वाचन घोषणा पर लिखल कविता, २०७७ माघ १२, कलंकी काठमाडौं)

मिथिलाकेँ रित

मैदान कयला केँ बाद पैइनछुवा तँ रिते छैक,
पुलही लोटा नई सहीँ, मिनेरल बोटल मैँ पानि भइरते छैथ,
खेतक आईर कॉँत, गालपर हात राखि केँ लोग बैसबे करैत छैथ,
मिथिला केँ ई त पुराने रित छैक ।१।

पछुवा रोटी खेनिहार सभ आगा कहियो नै बढैत छैक,
मोटका रोटी खेनिहार सभ हर बहै छैथ,
छत्ता तर बैस मालिक,हाथ पर आंगुरक घुँस्सा दइते छैथ
मिथिला केँ ई त पुराने रित छैक ।२।

तेलमालिस करै बलासभ गुलाम त होबे करैत छैथ,
भूँइया मैँ बइठईबाला सभ जी-हजूर,मालिक करिते छैथ,
ननकिरहबा विमार छई, तईयो दरबाजा पर हाजिर छैथ,
मिथिला केँ ई त पुराने रित छैक ।३।

रोटीपर नूनबुकनी,प्याजक चटनी खेनिहार सभ जनबनिहार होइते छैक,
दुई/चारि शेर बनि भेटल, साँउभका जोगाड भइये जाय छैक,
एकचुल्हिया पचरल, मरमसला केँ जोगाड में फाँड मैँ धान लँके दोकान दौडय छैथ,
मिथिला कें ई त पुराने रित छैक ।४।

माथ पर ठोप आ त्रिपाइत डाइढ तानैवला सभ ब्रह्मनालक अवतार मानबे करैत छैथ,
प्रणामपाति करि, आर्शिवाद त भेटबे करत छैक,
दान, दक्षिणा लेबे करत, नय त मनमनिया श्राप सुनय पडैत छैक
मिथिला केँ ई त पुराने रित छैक ।५।

रौद मे पगडी आ युद्धभूमि मैँ मुरेठा केँ प्रचलन मिथिला मैँ लोकप्रिय छैक,
यज्ञोपवितोउपरान्त लगबैय बला पागक भारी जबरजस्ती आब माथ पर अछि
बुद्ध केँ बहिष्कार कएनिहार सभ पेरबा आ छागड के हलाली कइरते अछि
मिथिला केँ ई त पुराने रित छैक ।६।

सोलह श्राद्ध पर गोदान करबा केँ मृत्तआत्मा सभ स्वर्ग मैँ दूध पिविते छैथ,
डर ,त्रास आ धार्मिक आडम्बरी के अस्त्र बना,
सभा नय सही गाम मैँ भोज बलजोरी करबैते छैथ,
मिथिला केँ ई त पुराने रित छैक ।७।
(२०७४ पुस ३० रविबार)

मिथिलाके दाना पानिए बताह छै

जकरा भेटल बन्दुक सेहा हबलदार छै,
दोसरके अल्पज्ञानी अपनेटाके सर्वज्ञानी मानै छै,
गुण-दोषके पहिचान नई छै,
आत्मप्रशंसा गत्तर-गत्तर भरल छै,
डेग डेग सर्वेसर्वाके अभिमानी छै ,
ठोप-कमण्डल बड भारी छै,
मिथिलाके दानापानिए बताह छै ।१।

घर-घर मर्खाहा बरद छै,
साढ बनै लेल हमेशा तयार छै,
माथ पर सिंघ नई छै,
मुदा चमेलीक तेल लगबै छै,
नाथैवाला कम छै,
तें बिन नाथल उल्का छै,
लथार फेक मातल छै ,
मिथिलाके दानापानिए बताह छै ।२।

प्रतिभाके कदर नई छै,
निक आन नई अपन निक छै,
कथित मानक जातिवलाके गुमाने बड छै,
दोसरके ओ अपन कहा' बुझै छै,
चेहरा भितर एक बाहर दोसर छै,
मुहमे नई पेटमे दात छै,
मिथिलाके दानापानिए बताह छै।३।

सभकेसभ घमण्डमे चूर छै,
भाषाके नाम पर कमाई धन्दा छै,
एकर उत्थानक फिकिर नई छै,
मात्र मिथिला-मैथिली करैत छै,
प्रोजेक्ट आ सरकारी पद हडपै छै,
सदखनि टकाके टकटकीमे रहैत छै,
एकरे ओ प्रतिभा कहैत छै,
मिथिलाके दानापानिए बताह छै ।४।
(२०७७-०८-२०)

छठ

भाई हौ, विज्ञान कहै छै-
सूरुज स्थिर छै,
पृथ्वी ओकर परिकर्मा करै छै
ऊ नई डुबै, नई उगै छै।
मुदा लोक आस्था एकर विपरीत छै-
सूरुज सांझमे डुबै, भिनसरे उगै छै,
जे डुबै, सेहा उगै छै ,
ओकरे प्रति श्रद्धाभक्तिके छठ पर्व कहै छै।१।

आस्था अपरिवर्तनीय होइत छै,
तें छठके आवृत्ति वर्षौसं कायमे छै,
हर घरमे आधुनिक जीवन शैली छै
मुदा सूर्य उपासनाक ई पर्वमे कुनू बदलाब नई छै।२।

छठ सामुहिक पर्व छै,
हरेक आडम्बर आ तामझाम स मुक्त छै,
बिना पण्डित/पुरोहितके सम्पन्न होइत छै,
अई पर्वमे नई कुनू मन्त्र होइत छै,
तईयो मजबूत आस्था संग समाजक रग रगमे व्याप्त छै।३।

सन्देश सेहो बेजोड छै,
स्थानीय उत्पादन पर पर्व निर्भर छै,
घर स घाट धरि लोकल सामग्री प्रयोग होइत छै,
ग्रामीण शिल्पीके कलात्मक सूप दाउरा चगेरा उपयोग होइत छै
एहा, सामाजिक आ आर्थिक दर्शन अईमे छै
समाज ग्रामीण अर्थशास्त्रमे आत्मनिर्भरताक सन्देश ई पर्व दैत छै
मानव जीवनके बढका फिलासफी ध्वनित छै।४।

भाई हौ, विज्ञान कहै छै-
सूरुज स्थिर छै,
पृथ्वी ओकर परिकर्मा करै छै
ऊ नई डुबै, नई उगै छै।
मुदा लोक आस्था एकर विपरीत छै-
सूरुज सांझमे डुबै, भिनसरे उगै छै,
जे डुबै, सेहा उगै छै ,
ओकरे प्रति श्रद्धाभक्तिके छठ पर्व कहै छै।१।

आस्था अपरिवर्तनीय होइत छै,
तें छठके आवृत्ति वर्षोंसं कायमे छै,
हर घरमे आधुनिक जीवन शैली छै
मुदा सूर्य उपासनाक ई पर्वमे कुनू बदलाब नई छै।२।

छठ सामुहिक पर्व छै,
हरेक आडम्बर आ तामझाम स मुक्त छै,
बिना पण्डित/पुरोहितके सम्पन्न होइत छै,
अई पर्वमे नई कुनू मन्त्र होइत छै,
तईयो मजबूत आस्था संग समाजक रग रगमे व्याप्त छै।३।

सन्देश सेहो बेजोड छै,
स्थानीय उत्पादन पर पर्व निर्भर छै,
घर स घाट धरि लोकल सामग्री प्रयोग होइत छै,
ग्रामीण शिल्पीके कलात्मक सूप दाउरा चगेरा उपयोग होइत छै
एहा, सामाजिक आ आर्थिक दर्शन अईमे छै
समाज ग्रामीण अर्थशास्त्रमे आत्मनिर्भरताक सन्देश ई पर्व दैत छै
मानव जीवनके बढका फिलासफी ध्वनित छै।४।

बेसुर ढोल

बेसुर ढोल बजैत अछि गामक पथारमे,
न ताल, न लय, मुदा भैरगर अछि अपारमे।

गरीबीक गहिर गह्वरमे डुबैत लोकक स्वर,
कखनो चिचियाइत, कखनो मौन, कखनो बिसैर।

धोती फाटल, लुंगी पुरान, चप्पलक संग जख्म,
बचपनसँ बुढ़ापा धरि, जिनगी बनल संघर्षक क्रम।

असहाय हाथ, जे खेतमे पसीना बहबैत अछि,
ओहि हाथमे शासनक कलम कहियो नहि रहैत अछि।

बेसाहा लोक, न संगठन, न आवाजक मंच,
सुनैत अछि नेता सभकेँ, मुदा अपन बात रखैसँ बंचित।

बाँसक घर, टाटक छान आ चूल्हीमे धुआँ,
सपना सब उड़ी गेल, रहि गेल खाली भूखक कथा।

कविता बनल अछि आँखिक नोर,
जे देखैत अछि सपना, मुदा भेटैत नहि भोर।

विभेदक रेखा खींचल अछि गामक गली-गली,
कतौह महल, कतौह जिनगी बनल झिल्ली।

बेसुर ढोल, ओहि लोकक स्वर थिक,
जे अपन पीड़ा केँ गीत बनबैत थिक।

न मंच, न माइक, मुदा आत्मा सँ गूंजैत बोली ,
बेसुर समाजक एहा सुर असली।

नेपाली कविता खण्ड

लकडाउनमा भोका

लकडाउनमा फैलिदैछ भोक र भोकमरी,
सरकारले बाँडन थालेको छ राहत सामग्री,
मन फुरुंग बनाउँदै गएँ लिन राहत सामग्री,
घन्टौ बसें, पाइएन नागरिकता बिना राहत सामग्री ।१।

विश्वव्यापी बनेको कोरोना भाइरस,
मानवताकै नाताले सहयोग पाउँने थियो आश,
तर, न मतदाता न नागरिकता अनि कसले पो गर्छ विश्वास,
रित्तो हात फर्के हुँदै निराश ।२।

पहिले पार्टीको सदस्यता खोजे,
पछि कार्यकर्ताको सिफारिस पनि खोजे,
अझ हुँदै नभएको कुराहरु पनि मसंग खोजे,
म भने गरिब, असहाय र निरीह हुँ भनेर सम्झाउन खोजे ।३।

तीन तहको सरकार छ,
तर पनि ज्यालामजदुरी गर्ने भोकभोकै छ,
ठाउँ-ठाउँमा राहत खुबै बाँडिएको सुनिन्छ,
काम गरेर खानेको अझैपनि चुलो नबलेको सुनिन्छ ।४।

सुनिन्छ पल्लोघरेकोमा थन्किए पोकाका पोका,
सरकारले लागू गर्यो राहतमा एकद्वारे ढोका,
जनप्रतिनिधि पहिले पुग्छन् आफ्ना मतदाताको ढोका,
लकडाउनमा पेट बाँधिएकाहरु बाध्य छन् बस्न भोका ।५।

(२०७७ वैशाख ९ गते मंगलबार राति ९:१५)

नव वर्ष

नव वर्ष मंगलमय होस्,
सुख-शान्ति अतिशय होस्,
वैभव-कुटुम्बकम् कायम रहोस्,
कोरोना भाइरसको अन्त्य होस् ।

सोसल मिडिया दुईधारे तलबार नबनोस्,
सूचनाको खानी यसको सही सदुपयोग होस्,
गलत प्रयोगकर्ताको हातमा यो नपरोस्,
बारुद गोला बन्नबाट यो बचोस् ॥

'सामाजिक वीरहरु' संजालमा अग्र मोर्चामा होस्,
'घृणा फैलाउने दूतहरु' संधै पछाडी परोस्,
लाईक-डिसलाईकको खेल यसमा अब बन्द होस्,
भावनामा बगेर यसका भिडियो/पोस्ट शेयर नहोस् ।॥

भर्च्युअल संवादहरु सार्थक बनोस्,
द्वेश-क्लेसको अन्त्य होस्,
सामाजिक दूरी पहिले झै कायम होस्
स्वार्थ-लोभको अन्त्येष्टि होस् ॥॥

नूतन वर्ष हर्षमय बनोस्,
एउटै छतमूनि घरै-घर नबनोस्,
'हामी र उनीहरु' को भावको दाहसंस्कार होस्
'म र मेरा' होइन 'हामी र हाम्रा' ह्रदय उद्गार बनोस् ।

(२०७७ वैशाख ०१, शिवनगर निवास, कलंकी, ९:०० बजे)

देश-सीमा र लोकतन्त्र

लुटेराहरुका बीचबाट,
बहुमत आधारमा,
नेता छान्नु,
लोकतन्त्र होइन ।१।

कार्यकर्ताका विचार,
जनताको भन्दै,
प्रचार गर्नु,
लोकतन्त्र होइन ।२।

सेनासंग बन्दूक,
तर देश-सीमा रक्षामा,
नेताको निर्देशन पर्खनु,
लोकतन्त्र होइन ।३।

दल एकै,
नेता अनेक,
पद जोगाउन भागबन्डा गर्नु,
लोकतन्त्र होइन ।४।

जनताका पीर,
मर्का-दुःखमा,
सरकार, साथी नबन्नु,
लोकतन्त्र होइन ।५।

जन-करबाट,
सुखशयलमा रमाउँदै,
सुविधाभोगमा ललायित हुनु,
लोकतन्त्र होइन ।६।

नागरिकका मर्म,
घाउमा मलहम पट्टी,
लगाउन नसक्नु,,
लोकतन्त्र होइन ।७।

सीमा मिचिदा,
मातृभूमिको रक्षामा,
सत्तासिनमै अज्ञानता प्रदर्शन गर्नु,
लोकतन्त्र होइन ।८।

मतदाता,
जनादेशको अपमान,
घरी-घरी गर्नु ,
लोकतन्त्र होइन ।९।

दुई तिहाई,
बहुमतको सरकार,
अन्य दल फुटाउन खोज्नु,
लोकतन्त्र होइन ।१०।

देश एकै,
रंग-भूगोल फरक,
दोस्रो दर्जाको व्यवहार गर्नु,
लोकतन्त्र होइन ।११।

(२०७७ वैशाख ३१ । दिउँसो ३:३५ बुधबार)

बार्दलीमा खुर्सानीको बोट

माटो एकै,
कौशी र बोट पनि एकै
रोप्ने व्यक्ति एकै,
पानी र स्याहार गर्ने पनि एकै,
छिमेकीले दिएको बोट एकै,
खुर्सानीको आकार भएन एकै,
गुण एकै,
स्वाद र पिरो नहुन सक्छ एकै,
मेरो बार्दलीमा खुर्सानीको बोट एकै ।

जिब्रोमा पिरो एकै,
पिडा महशुस गर्ने पनि एकै,
जिब्रोको पिरो भने हुन्न एकै,
यो तीर समान हुन्छ एकै
धेरैलाई पीडित बनाउने एकै
चरित्र एकै,
माध्यम र सोच नहुने रैछ एकै,
जिब्रोको रसायन एकै
तर, जिब्रोको उपयोग नहुन सक्छ एकै ।।

पेशा एकै,
सोच नहुन सक्छ एकै,
समुदाय र क्षेत्र एकै,
धन्दा र आचरण पनि एकै,
तर, अनुशासन भएन एकै,
बार्दलीको त्यो खुर्सानीको बोट एकै,
तर, दुई फलको आकार भएन एकै,
तछाड मछाड एकै-एकै,
दुर्भाग्य भयो घटना एकै ।।।

(सप्तरीमा एउटा पत्रकार अर्को विरुद्ध खनिदाको खबरले आहत मनका तरंगहरु अन्यासै शब्दबद्ध भएछ । यसमा चाही बार्दलीको खुर्सानीको बोटले पनि कम भूमिका निर्वाह गरेको छैन । २०२० अगस्ट १७)

मदारीहरुको डमरु

काठमाडौंको सिंहदरबारतिर मदारीहरुको डम डम डमरु,
अमेरिकी अविस्कार संजालतिर बेतालमै नाच्दै सबै बिना घुंघरु ।१।

माहिर छन् तिनीहरु बजाउन बेमौसमी डम्फू,
बेसुराहरु खै किन छन् त्यसमा बेस्सरी कमर मर्काउन उतारु ।२।

नियत नै जसको छ करको बोझ मुनि जन रुवाउनु,
पटक-पटक चटके बन्दै तिनले किन जग न हँसाउनु ।३।

दिनचर्या बन्यो जसको सपना बाँड्दै जनभावनासंग खेल्नु,
जनमतको अवज्ञा गर्दै तिनले जन-जनलाई भेडा किन नठान्नु ।४।

राज्य ढुकुटीमा आफू रम्दै आसेपासेलाई रौवाफदार बनाउनु,
सडक सुनसान, तर साइरेनहरुबीच तिनी निर्लज्ज भई किन न रमाउनु ।५।

टमटमका घोडा जस्तै पार्टी कार्यकर्ता मात्र किन बन्नु,
जसको वाध्यता नै छ आँखामा पट्टी र चाबुकको त्रासमा बाँच्नु ।६।

चित्त नबुझे नी कथित मर्यादा पालकको आदेश पछाडि मात्रै किन डौडिनु,
व्यक्तिगत डिग्नीटीलाई सुलीमा चढाई किन अनेकौ वाध्यताबाट गुज्रीनु ।७।

(कलंकी काठमाडौं । ०७७ जेठ ६)

मानिसको रहर

विचित्रकै हुँदो रहेछ मानिसको रहर,
सडक व्यस्त हुँदा खुला हेर्ने रहर,
सुनसान अवस्थामा गाडी गुडेको हेर्ने रहर ,
लकडाउनले निम्त्यायो खै के-के पो रहर ।१।

यदि व्यस्त सडक हेर्ने छ तपाईको रहर,
एकैछिन युट्युब हेरेर पुरा गर्नुस त्यो रहर,
तर,लकडाउन जारी छ घरबाहिर जाने नगर्नुस् रहर,
लामो समय परिवारसंगै बिताउने पुरा गर्नुस् रहर ।२।

बजार खुल्ला हुँदा, हुँदैन बाहिर जाने रहर,
बन्द हुँदा जाउँ-जाउँ लागि रहने मानिसको रहर,
रेस्टुरेन्ट बन्द छ, त्यता जाने रहर,
खुला हुँदा महँगो भन्दै मार्छ त्यो रहर ।३।

स्कूल, कार्यालय बन्द छ, चाडो खुलोस भन्ने रहर,
खुलेका बेला समयमै नजाने मानिसको रहर,
बस नगुड्दा बसमै चढ्ने रहर,
गुड्दा गाडी सहचालकको दुर्व्यवहारले चढ्नै गर्दैन रहर ।४।

टोल, बजार, गल्लिमा मेला हेर्ने रहर,
हप्तौं भयो पुरा हुन नसकेको त्यो रहर,
व्यस्त जीवनमा एकान्त खोज्ने रहर,
लकडाउनले सुनसान बनाउँदा भिडभाड खोज्ने रहर ।५।

(शिवनगर, कलंकी, काठमाडौं, २८ वैशाख २०७७)

कविक परिचय

नाम : दिनेश यादव ।
माता पिता : श्रीमति हजारीदेवी यादव आ श्री रामेश्वर प्रसाद यादव ।
जन्म : ०६ अक्टूबर १९६९ (वि.सं. २०२६ आश्विन २१)
जन्मस्थान : राजगढ गाउँपालिका-०६, फकिरा, सप्तरी, मधेश प्रदेश ।
वर्तमान निवास -काठमाण्डू महानगरपालिका-१४, कलंकी , शिवनगर टोल, काठमाडौं ।
पेशाः अध्यापक, पत्रकारिता, लेखक, अनुवादक ।
प्रारम्भिक शिक्षा : श्री शारदा राष्ट्रिय प्राथमिक विद्यालय, फकिरा, सप्तरी, मधेश प्रदेश (नेपाल) (कक्षा-१ सँ ३ धरि अध्ययन) । श्री जन आदर्श माध्यमिक विद्यालय, शिवगंज, झापा, कोशी प्रदेश (नेपाल) (कक्षा-४ सँ १० धरि अध्ययन)
उच्च्व शिक्षा -ल.ना.मि. विश्वविद्यालय , दरभंगा, विहार(भारत) । त्रिभूवन विश्वविद्यालय कीर्तिपुर, काठमाण्डू **(नेपाल)।**
शैक्षिक योग्यता : एमएस्सी (भौतिक शास्त्र), एमपीए (जनप्रशासन), बीएड (विज्ञान शिक्षण) ।

कृति -

(क) **स्वरचित** -भाषा, साहित्य आ मानक (खण्ड -१) : मैथिली भाषामें अनुसन्धानात्मक विश्लेषण (अनलाईन संस्करण, कविता कोश आ इन्टरनेट अर्काइभ डट ओआरजीमें प्रकाशित । गरीबो की जिंदगी : हिन्दी भाषामे कविता संग्रह, भारतके साहित्यपेडियाद्वारा प्रकाशित । मैथिली, हिन्दी आ नेपालीमें हाइकु संग्रह (पाण्डुलिपी । मैथिली, हिन्दी आ नेपालीमे कविता संग्रह (पाण्डुलिपी) ।

(ख)सहलेखन - यादव नेपालको आदिवासी, वि.सं. २०६३ ।

(ग) संपादन- 'नव प्रतिबिम्ब' हिन्दी द्विमासिक पत्रिका, 'कान्तिपुर' राष्ट्रिय दैनिकमे समाचार-फिचर संपादन, समय सारथी पत्रिका, 'सहारा टाईम्स' पाक्षिक पत्रिका आ 'द सोसलिस्ट' द्विमासिक पत्रिका आदिमे संपादन ।

(घ) पाठ्यक्रम आ पाठ्यपुस्तक लेखन- नेपालके कोशी प्रदेशके कोशी गाउँपालिका आ वर्जु गाउँपालिकाके कक्षा- १ सँ ८ धरि, स्थानिय पाठ्यक्रम आ पाठ्यपुस्तक (नेपाली भाषा) । 'साइन्स एण्ड टेक्नोलजी' कक्षा-१ सँ १० धरि स्वलेखन (अंग्रेजी) ।

सेवा-सम्प्रति -श्री रत्नराज्य माध्यमिक विद्यालय रामकोट, काठमाण्डूमें वि.सं. २०५२ सँ २०७५ धरि माध्यमिक विद्यालय तृतिय श्रेणी पदमे विज्ञान आ गणित विषयके अध्यापन । नेपालके राष्ट्रिय दैनिक 'कान्तिपुर' आ 'नारी' मासिक पत्रिकामे वि.सं. २०५७ सँ २०८० धरि वरिष्ठ उपसम्पादक पदमे रही सक्रिय पत्रकारिता । वर्तमानमे नेपालक उपराष्ट्रपतिके कार्यालयमे उपराष्ट्रपतिके निजी सचिवालयमे स्वकीय प्रेस संयोजक/प्रेस सल्लाहकारके रुपमे कार्यरत ।

साहित्य आ अन्य सेवा - अन्तर्राष्ट्रिय मातृभाषा दिवस सन् २०१९ के अवसर पर आयोजित राष्ट्र मातृभाषा कविता महोत्सवमे मैथिली भाषामे कविता वाचन । नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानके उपकुलपति आ प्राज्ञ डा. जगमान

गुरुङके प्रधान संपादकत्वमे नेपाल प्रद्दाा प्रतिष्ठानद्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-अर्ध वार्षिक पत्रिका 'सयपत्री' (अंक ३५-३६,चैत-वैशाख-२०२५) में 'मैथिली भाषा आ साहित्यः समस्या आ समाधान शीर्षकमे अनुसन्धानमुलक आलेख प्रकाशित। प्राज्ञ डा.योगेन्द्र प्रसाद यादवके प्रधान संपादकत्वमें प्रकाशित मैथिली वार्षिक पत्रिका 'आङ्ग' (वर्ष १०,अंक ८, वि.सं. २०५७) मे 'भाषिक पत्रकारिताः चुनौती आ समाधान' शीर्षकमें मैथिली भाषामे अनुसन्धानमुलक लेख प्रकाशित। काठमाण्डूसँ प्रकाशित होमेवाला 'अपन मिथिला' मासिक पत्रिकामे वि.सं. २०६८ सँ २०७२ धरि विभिन्न समसामयिक विषयमें दर्जनसँ बेसी समाचार विश्लेषण-रिपोर्ट प्रकाशित।

पुरस्कार तथा सम्मान - पत्रकारितामे महत्पूर्ण योगदान हेतू नेपाल यादव सेवा समिति काठमाण्डूद्वारा 'रेखा यादव पत्रकारिता पुरस्कार-२०६९'सँ सम्मानित एवं पुरस्कृत। प्रेस काउन्सिल नेपालके द्वारा 'प्रेस काउन्सिल समावेशी पत्रकारिता पुरस्कार-२०७२' सँ सम्मानित आ पुरस्कृत। नेपाल सरकारद्वारा स्थापित विद्यापति पुरस्कार कोषद्वारा वि.सं. २०७६ मे मैथिली भाषा आ साहित्य क्षेत्रमे महत्वपूर्ण योगदानक लेल एक लाख नेपाली राशीके 'नेपाल विद्यापति मैथिली अनुसन्धान पुरस्कार-२०७६' प्राप्त। विद्यालय तहमें शिक्षण सिकाई क्रियाकलापमे उत्कृष्ट अध्यापनक लेल सवोत्कृष्ट शिक्षक सम्मान प्राप्त (विज्ञान आ गणित विषयमे)।